अध्याय १८

माउंट बैटन योजना
(Mount Batten Plan)

जब लार्ड माउंट बैटन वायसराय बनकर भारत आये, जिस पहले नेता से वे मिले वह थे—जवाहरलाल नेहरू। उन्होंने नेहरू से कहा—"मिस्टर नेहरू, मैं यह चाहता हूं कि आप मुझे भारत में ब्रिटिश शासन समेटने वाला अन्तिम वायसराय नहीं, बल्कि नये भारत के पथ ले चलने वाला पहला वायसराय समझें।[1]"

नेहरू मुस्कराए और उन्होंने उत्तर दिया—"अब मैं यह समझा कि आपके बारे में यह क्यों कहा जाता है कि आपकी खूबसूरती बहुत खतरनाक है।"[2]

भारत की स्थिति

अपनी रूपसी पत्नि तथा सुकोमल कन्या के साथ, शानदार व्यक्तित्ववाला लार्ड माउंट बैटन २२ मार्च, १९४७ को वायसराय के रूप में दिल्ली उतरा। लार्ड माउंट बैटन दक्षिण पूर्वी एशिया में ब्रिटिश सेनाओं के कमाण्डर-इन-चीफ रह चुके और उसी दौरान उनकी नेहरू से मुलाकात और दोस्ती भी हुई। यह दोस्ती बाद में बहुत निर्णायक सिद्ध हुई।

लेकिन जब लार्ड माउंट बैटन ने अपना कार्यभार सम्भाला, उस समय भारत में क्या हो रहा था ?

भारत में एक अंतरिम सरकार बनी हुई थी। जिसमें कांग्रेस समर्थक नौ सदस्य थे और लीग के पाँच। परन्तु लीग के पाँच सदस्यों ने यह निश्चय कर रखा था कि वे सरकार को चलने नहीं देंगे। क्योंकि किसी अच्छे काम को रोकना बहुत सरल होता,

---

1. MOUNT BATTEN—"Mr. Nehru, I want you to regard me not as the last Viceroy winding up the British Raj but as the first to lead the way to the new India."

2. NEHRU—"Now, I know what they mean when they speak of your charm being so dangerous."

Scanned with CamScanner

करना बहुत कठिन। लीग अपने उद्देश्य में सफल हो रही थी और उसकी सहायता पुराने वायसराय और कई अंग्रेज अफसर कर रहे थे। परेशान नेहरू ने तो साफ-साफ कहा था—"लीग और उच्च अंग्रेज अधिकारियों के बीच एक मानसिक समझौता हो चुका है।"[1] और पिछले वायसराय वेवल यह सब तमाशा देखते रहते थे। नेहरू ने कहा था—"वह धीरे-धीरे कार के पहिए निकाल रहा है और इससे स्थिति और भी भयंकर बन रही है।"[2]—इसीलिए तो वेवल का तबादला कराया गया था।

लन्दन में नेहरू, जिन्ना और बलदेव सिंह का जो सम्मेलन बुलाया गया था, वह भी असफल सिद्ध हुआ था। लीग और कांग्रेस के बीच की खाई और भी चौड़ी हो गई थी। अन्तरिम सरकार वस्तुतः ठप्प हो गई थी।

दुसरी बात यह कि दिसम्बर १९४६ में जब संविधान सभा का प्रथम अधिवेशन बुलाया गया, लीग ने उसका बहिष्कार कर दिया। उसके ७३ सदस्यों में से एक ने भी संविधान सभा के अधिवेशन में भाग नहीं लिया। यद्यपि इसके उपरान्त भी संविधान सभा का कार्य सुचारू रूप से चलता रहा और अन्ततः उसने एक अच्छा संविधान बना भी दिया। तो भी लीग के बहिष्कार से कम से कम, मुस्लिम प्रान्तों के लिए संविधान सभा को संविधान बनाने का नैतिक अधिकार नहीं रहा और सबसे बड़ी बात यह कि इस क्षेत्र में भी लीग ने एक गतिरोध उत्पन्न करना चाहा और यह जताया कि वह कांग्रेस के साथ मिलकर कुछ भी करने को तैयार नहीं है।

तीसरी और सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि १६ अगस्त, १९४६ को मोहमद-अली जिन्ना—सीधी कार्यवाही—के द्वारा भारत में साम्प्रदायिक दंगों की जो ट्रेन चलायी थी, वो अभी तक किसी स्टेशन पर रुकी न थी। लगातार कभी एक और कभी दूसरे भाग में लीग और अंग्रेज अफसरों के आशीर्वाद पर मुस्लिम गुण्डे हिंदुओं का कत्लेआम करते रहते थे और इसकी स्वाभाविक प्रतिक्रिया भी होती रहती थी। जब तक पंजाब में सिकन्दर हयातखान मुख्यमंत्री बने रहे, पंजाब इन दंगों से बचा रहा। परन्तु मुस्लिम दबाव के आगे जैसे यूनियनिस्ट पार्टी के नेता सिकन्दर हयातखान मुख्यमंत्री ने त्यागपत्र दे दिया, पंजाब में भी मुस्लिम गुण्डों द्वारा हिंदुओं पर नर-पिशाची हत्या का दौर चल पड़ा। पंजाब के गवर्नर इवान जैनकिन्स ने लीग की मदद की। यदि वह चाहता तो एक ही दिन में उसकी पुलिस और सेना गुण्डों को कुचल सकती थी। परन्तु वो ऐसा क्यों चाहने लगा? बल्कि जैनकिन्स और सीमा प्रान्त का घाघ गवर्नर ओलिफ कैरो तो चाहते ही थे कि दंगे हों और यह सिद्ध हो जाये कि भारत में हिन्दू-मुस्लिम साथ-साथ नहीं रह सकते। उनका और लीग का खेल ही यही था।

---

1. NEHRU—"There is a mental alliance between the League and senior British officials."

2. NEHRU—"He is gradually removing the wheels of the car and this is leading to a critical situation."

Scanned with CamScanner

११ मार्च को नेहरू पंजाब के दौरे पर गये और उन्होंने स्वयं अपनी आँखों से अमानुषिक अत्याचारों का सिलसिला देखा था। नेहरू ने कहा—"मैंने वीभत्स दृश्य देखे हैं और मैंने उन व्यवहारों के बारे में सुना है जिससे पशुत्व भी लज्जित हो जाएँ।" और देहली पहुंचने पर उन्होंने कहा—"यदि किसी व्यक्ति में थोड़ी-सी भी सद्बुद्धि है, तो चाहे उसका उद्देश्य कुछ भी हो, वह यह महसूस करेगा कि उन्हें प्राप्त करने का यह कोई तरीका नहीं है।"[1] लेकिन नेहरू तो आदर्शवादी थे। मुस्लिम लीग को पाकिस्तान बनाने का यही एकमात्र रास्ता नजर आ रहा था और वह उस पर चल भी रही थी। जिस दिन माउंट बैटन भारत पहुंचे, उसी शाम को सरकारी तौर पर यह घोषणा की गई थी कि अब तक पंजाब में २,०४९ व्यक्ति मारे गये हैं और एक हजार घायल हुए हैं। पर यह तो सरकारी आंकड़े हैं और सरकारी आंकड़े कितने कम हुआ करते हैं, कौन नहीं जानता।

एटली की घोषणा

लार्ड माउंट बैटन को भारत भेजने से एक मास पूर्व २० फरवरी, १९४७ को लन्दन में ब्रिटेन के प्रधान मंत्री एटली ने घोषणा की कि जून, १९४८ तक अंग्रेज भारतीयों को सत्ता सौंप कर भारत से चले जाएंगे।

घोषणा में प्रधानमंत्री ने कहा—"सम्राट की सरकार की यह हार्दिक इच्छा है कि उत्तरदायित्व का सम्पूर्ण भार उनके हाथों में सौंप दे, जिनको भारत के समस्त दलों द्वारा निर्मित किया हुआ संविधान स्वीकार हो। वर्तमान स्थिति को अधिक नहीं रहने दिया जायेगा। अतः सम्राट की सरकार यह स्पष्ट करती है कि वह जून १९४८ तक समस्त सत्ता उत्तरदायी भारतीयों के हाथ में सौंप देगी।"

प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि अब आवश्यक है कि भारत के सभी दल आपस में मिलकर समझौता कर लें और एक ऐसे संविधान का निर्माण करें, जिसके अनुसार गठित सरकार को सत्ता सौंपी जा सके। "किन्तु यदि निश्चित तिथि तक इस प्रकार से संविधान निर्मित नहीं किया जाता तो ब्रिटिश सरकार को यह निश्चित करना होगा कि फिर सत्ता किसको उस तिथि पर हस्तान्तरित की जाए।

इस घोषणा का भारत पर जादूई प्रभाव पड़ा था। कांग्रेस और लीग की गतिविधियाँ और तेज हो गई। यह तय हो गया कि अंग्रेज भारत से जाएँगे, सवाल केवल यह था कि वे सत्ता किसको सौंप कर जाएँ और इसका फैसला माउंट बैटन को करना था।

---

1. NEHRU—"I have seen ghastly sights and I have heard of behavior by human beings which would degrade brutes...If there is a grain of intelligence in any person he must realise that whatever political objective, he may aim at this is not the way to attain it."

Scanned with CamScanner

माउंट बैटन का निर्णय

भारतीय परिस्थितियों का अध्ययन करने के पश्चात् माउंट बैटन को भी यह निष्कर्ष निकालने में देर नहीं लगी थी कि भारत में व्यवस्था, शान्ति और सुदृढ़ता के लिए आवश्यक है कि पाकिस्तान बना ही दिया जाए। लेकिन क्या कांग्रेस स्वीकार करेगी भारत के विभाजन को ? नेहरू को मनाने में श्रीमती माउंट बैटन का व्यक्तित्व काम आया और पटेल को मनाने में यथार्थवादी रणनीति। और गांधीजी ? गांधीजी अन्त तक पाकिस्तान के निर्माण का विरोध करते रहे। उन्होंने कहा—"अगर सारे भारत में भी आग लग जाये तो भी पाकिस्तान का निर्माण सम्भव नहीं है।" बल्कि उन्होंने यहाँ तक कहा—"पाकिस्तान का निर्माण मेरे शव पर होगा।"[1] गांधी उन दिनों राजनीति से थोड़े पीछे थे, वास्तविक राजनीति की लगाम नेहरू और पटेल के हाथ में थी और वी०पी० मेनन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Integration of Indian States में लिखा है—माउंट बैटन गांधी की तारीफ करके उसे टाल रहा है—"नेहरू उसकी जेब में है और पटेल के साथ वह निर्णय कर रहा है। पटेल भी उसकी झूठी तारीफ करके, राजाओं पर उसके माध्यम से जाल डाल रहा है।"

जब माउंट बैटन आश्वस्त हो गया कि नेहरू और पटेल उसका विरोध नहीं करेंगे, उसने अपनी योजना घोषित कर दी।

माउंट बैटन योजना की मुख्य बातें

३ जून, १९४६ को माउंट बैटन ने एक योजना प्रस्तावित की। इस योजना को माउंट बैटन योजना कहते हैं। इसकी मुख्य बातें इस प्रकार हैं—

(१) भारत का विभाजन—माउंट बैटन ने अपनी योजना में स्पष्ट रूप से कहा कि भारत को टुकड़ों में बाँट दिया जाए—एक भारत और दूसरा पाकिस्तान। उनका कहना था कि भारत की समस्या का सर्वश्रेष्ठ समाधान भारत में पाकिस्तान का निर्माण ही है।

(२) लंगड़ा पाकिस्तान—जिन्ना ने जो पाकिस्तान माँगा था, उसमें पश्चिम में पंजाब, सिंध, सीमा प्रान्त और बलोचिस्तान के प्रान्त थे और पूर्व में बंगाल और आसाम। इस पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान को जोड़ने के लिए जिन्ना ने भारत के बीच से एक 'गली' भी माँगी थी। परन्तु माउंट बैटन ने यह योजना अस्वीकार कर दी थी। उसके द्वारा प्रस्तावित पश्चिमी पाकिस्तान में से पंजाब और पूर्वी पाकिस्तान में से बंगाल और आसाम के हिन्दू क्षेत्र भारत को मिलने थे। 'गली' की बात तो उड़ा ही दी गई थी। जिन्ना ने कहा था—यह तो "एक लंगड़ा पाकिस्तान" है।

---

1. GANDHIJI—"Even if the whole of India is in flames, it will not bring Pakistan....Pakistan would be made on my dead-body."

Scanned with CamScanner

(३) **सीमा प्रांत में जनमत**--सीमा प्रान्त की अधिकांश जनता मुस्लिम थी, परन्तु वहाँ कांग्रेस की सरकार थी। अतः योजना में यह प्रस्तावित किया गया कि सीमा प्रान्त के भविष्य का निर्धारण जनमत संग्रह के द्वारा किया जाएगा।

(४) **देशी रियासतें**—देशी रियासतों के सम्बन्ध में वहाँ व्यवस्था लागू रखने के लिये कहा गया था, जो कैबिनेट ने की थी। दूसरे शब्दों में देशी रियासतें स्वतंत्र थीं। वे चाहें तो भारत में मिल सकती हैं, चाहें तो पाकिस्तान में अथवा चाहें तो स्वतन्त्र रह सकती हैं।

(५) **जून १९४८ नहीं, अगस्त १९४७**--माउंट बैटन योजना में यह भी कहा गया कि ब्रिटेन की सरकार सत्ता हस्तान्तरण के लिये जून १९४८ तक इन्तजार नहीं करेगी, बल्कि वह तो अगस्त १९४७ तक ही सत्ता का हस्तान्तरण कर देगी।

(६) **कमीशन की नियुक्ति**—योजना में कहा गया कि यदि हिन्दू और मुसलमान—यानी कांग्रेस और लीग—भारत के विभाजन की बात स्वीकार कर लेते हैं, तो भारत और पाकिस्तान की सीमा का निर्धारण करने के लिये एक कमीशन बैठाया जायेगा और वही विभाजित भारत का सीमांकन करेगा।

योजना की स्वीकृति

जब माउंट बैटन योजना प्रसारित हुई तो छूटते ही मोहम्मदअली जिन्ना ने उसके विरुद्ध प्रतिक्रिया की। उसका आरोप था कि उसे एक 'लंगड़ा पाकिस्तान' दिया जा रहा है। प्यारेलाल ने अपनी पुस्तक—Mahatma Gandhi—The Last phase में लिखा है--**"मोहम्मदअली जिन्ना ने लंगड़े पाकिस्तान को स्वीकार करने से इंकार कर दिया, परन्तु उसे लार्ड माउंट बैटन के दबाव के कारण स्वीकार करना पड़ा।"** जिन्ना ने कहा--"पाकिस्तान न होने से लंगड़ा पाकिस्तान ही अच्छा है।"

और कांग्रेस ?

कांग्रेस में केवल तीन प्रमुख नेता ऐसे थे, जिन्होंने विभाजन का सख्त विरोध किया था। एक मौलाना आजाद। उनका कहना था कि बड़े हिन्दुस्तान में मुसलमानों के हित ज्यादा सुरक्षित रहेंगे। दूसरे राममनोहर लोहिया और तीसरे पुरुषोत्तमदास टण्डन। १५ जून १९४७ को कांग्रेस महासमिति ने माउंट बैटन योजना को स्वीकार कर लिया। योजना के पक्ष में १५७ वोट आए और विपक्ष में केवल ९। गांधीजी ने भी उस समिति की बैठक में भाग लिया था। परन्तु उनके शिष्यों द्वारा पहले से ही योजना को स्वीकार कर लेने के कारण उनकी भी हिम्मत टूट गई थी। उन्होंने महासमिति के सदस्यों को कहा—"कांग्रेस के नेताओं ने आपकी ओर से योजना को स्वीकार कर लिया है। आप चाहें तो उसे उलट सकते हैं। परन्तु ऐसा आप तभी कर सकते हैं, जबकि आप एक बड़ी क्रान्ति के लिये तैयार हों। मैं नहीं समझता आप

Scanned with CamScanner

इसके लिये तैयार हैं।"[1] कांग्रेसी नेता खामोश बैठे यह सब सुनते रहे। दुर्गादास का कहना है कि यदि कांग्रेसी नेताओं ने एक साथ खड़े होकर कहा होता—"हाँ, हाँ, हम क्रान्ति के लिए तैयार हैं। तो शायद गांधीजी देश के प्रति अपने कर्तव्य के बारे में पुनर्विचार करते।"[2] पर, वे तो काठ की तरह बैठे रहे। केवल पुरुषोत्तमदास टण्डन ने कड़कती हुई आवाज में कहा—"नेहरू शासन लीग से दब गया है। आईये, हम लीग और अंग्रेज दोनों से लड़ें।" बहुत जोरदार तालियाँ बजीं। लेकिन वे लड़ने के लिये तैयार नहीं हुए। वास्तव में कांग्रेसी नेता पिछली तीन दशाब्दियों से अंग्रेजों के साथ लड़ते-लड़ते बूढ़े हो गये थे और अब उनमें और किसी लड़ाई की हिम्मत नहीं रह गई थी। कांग्रेस ने फैसला कर दिया। माउंट बैटन योजना स्वीकार है। भारत का विभाजन मंजूर है। बदले में हमें आजादी चाहिये, आजादी।

कांग्रेस द्वारा माउंट बैटन योजना स्वीकार करने के कारण

प्रश्न उठता है जब लगातार कांग्रेस के सभी नेता भारत के विभाजन का विरोध करते रहे, जब निरन्तर वे मुस्लिम लीग के 'दो राष्ट्रों' के सिद्धान्त को ठुकराते रहे, तो फिर वे एकदम भारत के विभाजन पर कैसे सहमत हो गये। क्यों उन्होंने माउंट बैटन योजना को स्वीकार कर लिया।

वास्तव में कांग्रेस द्वारा माउंट बैटन योजना को स्वीकार करने के निम्नलिखित कारण थे—

(१) हिन्दू-मुस्लिम दंगों को रोकने का एकमात्र उपाय—मुस्लिम लीग के प्रोत्साहन पर और अंग्रेज उच्चाधिकारियों के आशीर्वाद से जो हिन्दू-मुस्लिम दंगे हो रहे थे, वह केवल पंजाब और बंगाल तक ही सीमित नहीं थे। सारे भारत में दंगे हो रहे थे। बेगुनाह और मासूम लोगों का रक्त बहाया जा रहा था। कांग्रेस ने सोचा इस तरह हजारों लोगों का रक्त बहाया जाता रहे, इससे अच्छा तो यही है कि पाकिस्तान बन जाये। कम से कम यह मार-काट तो नहीं होगी। नेहरू ने पंजाब के दंगों की हालत, श्रीमती माउंट बैटन के साथ स्वयं देखी थी और हताश होकर उन्होंने कहा था—"अन्तरिम सरकार बंगाल और पंजाब के लोगों की रक्षा करने में सर्वथा असफल रही थी। पंजाब और बंगाल के दंगे केवल अपवाद नहीं थे। वे सब सुनियोजित आक्रमण थे।"[3] ब्रिटिश अधिकारी जो भारत छोड़ो जैसे सशक्त आन्दोलन को कुचल

---

1. GANDHIJI—"The Congress leaders have signed on your behalf. You can disown them, but you should do so only if you can start a big revolution. I do not think you can do it."

2. DURGADAS—"Had the audience roared back that they would follow him to resist partition he might have reflected on his duty to the nation."

3. NEHRU—"The interim Govt. was able to do nothing to protect the people. The horrible riots in the Punjab, Bengal and elsewhere were no isolated riots. They were planned attacks."

Scanned with CamScanner

सकते थे, अब पाशविकता का नग्न नृत्य देख रहे थे। नेहरू ने कहा—इस मार-काट से बचने का एक ही उपाय है—पाकिस्तान की माँग को स्वीकार करना।

(२) **गृह युद्ध को रोकने का एक मात्र उपाय**—जून १९४७ तक सम्पूर्ण भारतीय जीवन में साम्प्रदायिकता का विष इस बुरी तरह फैल गया था, कि उसको निकालने के लिए कठोर ऑपरेशन की सख्त आवश्यकता थी। इसके बिना अन्य कोई उपचार ही नहीं था। यदि पाकिस्तान की मांग को स्वीकार न किया जाता, तो नेहरू और पटेल का कहना था कि भारत के दफ्तर-दफ्तर, नगर-नगर में पाकिस्तान बन जाता। भारत गृह युद्ध की आग में झुलसता रहता और उसके टुकड़े-टुकड़े हो जाते। **सरदार** पटेल ने बनारस विश्वविद्यालय में दीक्षान्त समारोह पर भाषण करते हुए कहा था—"मैंने यह अनुभव किया कि देश का विभाजन स्वीकार न करने पर देश अनेक टुकड़ों में बंटकर बर्बाद हो जाता। एक वर्ष तक सरकारी पद पर आसीन रहने से हमें विश्वास हो गया कि हमारे आगे बढ़ने का ढंग हमें विनाश की ओर ले जा रहा है। इस प्रकार एक नहीं अनेक पाकिस्तान बन जाने की आशंका थी। एक एक दफ्तर में पाकिस्तानी कीटाणु घर कर जाते।"

(३) **सत्ता हस्तान्तरण की धमकी**—ब्रिटेन की सरकार यह घोषणा कर चुकी थी कि वह अगस्त १९४७ तक भारत में सत्ता हस्तांतरण करके चली जाएगी। यदि कांग्रेस माउंट बैटन योजना को स्वीकार नहीं करती तो हो सकता था, कि अंग्रेजी भारत के और भी अधिक टुकड़े कर उन्हें सत्ता सौंप कर जाते। वे देशी रियासतों को अलग अस्तित्व प्रदान कर सकते थे। वे सिक्खों का एक नया राज्य बना सकते थे। वह स्थिति तो और भी भयंकर होती। उस भयंकर स्थिति से बचने के लिए तो यह अच्छा ही था कि भारत के विभाजन की वर्तमान व्यवस्था मान ली जाए। ऐसा भी हो सकता था कि ब्रिटेन के नए चुनाव में अनुदार दल की सरकार जीत जाए और स्वतंत्रता की घड़ी की सुई फिर से उलटी दिशा में घुमा दी जाए। चर्चिल तो अन्त तक स्वतन्त्रता का विरोध ही करता रहा। इससे तो यही अच्छा था कि विभाजन होने दिया जाए। **सरदार पटेल** ने कहा भी था—"मैंने विभाजन को अन्तिम उपाय के रूप में तब स्वीकार किया था जब सम्पूर्ण भारत के हमारे हाथ से निकल जाने की सम्भावना हो गई थी।"

(४) **भारत की एकता और प्रगति के लिए पाकिस्तान आवश्यक**—ऐसा माना जाने लगा था कि यदि पाकिस्तान रूपी कैन्सर का फोड़ा भारत के शरीर में बना रहा तो भारत निरन्तर अस्वस्थ और बीमार रहेगा। भारत की एकता, सुदृढ़ता और आर्थिक प्रगति के लिए आवश्यक है कि घरेलू मोर्चे पर पूरी तरह शान्ति हो ताकि समस्त शक्तियों का उपयोग भारत की प्रगति की दिशा में हो सके। गोविन्द वल्लभ पन्त ने कहा था—"३ जून १९४७ की योजना की स्वीकृति ही स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए एकमेव मार्ग है। इससे शक्तिशाली केन्द्र बन सकेगा और भारत की उन्नति हो सकेगी।" इसी प्रकार सरदार पटेल ने कहा था—"यदि मुसलमानों को संघ में रहने के लिए विवश किया गया, तो प्रगति और आयोजन असम्भव हो जाएगा।"

Scanned with CamScanner

(५) जिन्ना को केवल लंगड़ा पाकिस्तान ही—जिन्ना एक बहुत बड़ा और विशाल पाकिस्तान चाहते थे। ऐसा पाकिस्तान जिसमें पूरे बंगाल व आसाम तथा पंजाब, सिंध, सीमा प्रान्त और बलोचिस्तान चाहते थे, परन्तु इस योजना के अनुसार उन्हें एक लंगड़ा पाकिस्तान ही दिया जा रहा था। इसमें आसाम का अधिकांश भाग, आधा बंगाल और आधा पंजाब पाकिस्तान से बाहर थे और सीमा प्रान्त में भी जनमत संग्रह द्वारा निश्चय किया जाना था। यह स्पष्ट है कि जिन्ना एक कटा-फटा पाकिस्तान नहीं चाहते थे, परन्तु विवश होकर उन्हें इसे स्वीकार ही करना पड़ा। इतने प्रदेश के कट जाने के बाद भी भारत एक विशाल देश ही बना रहा।

(६) कांग्रेसी नेता वृद्ध हो गये थे—माउंट बैटन योजना को स्वीकार करने का सबसे बड़ा कारण यह था कि कांग्रेस के अधिकांश नेताओं ने तीस वर्ष तक एक लम्बी लड़ाई अंग्रेजों से लड़ी थी। अब उनके जीवन की शाम हो गई थी। वे थक गए थे और किसी नई लड़ाई के लिए तैयार नहीं थे। बल्कि और भी बड़ा सच यह है कि स्वतन्त्रता जो अपने भारत के द्वार पर आ गई थी, हमारे नेता चाहते थे, उसका शुभागमन उन्हीं के जीवन में, उन्हीं के नेतृत्व में हो जाए तो अच्छा है। सत्ता के मोह का नशा उनके मस्तिष्क पर एक बार छा ही गया था। अब उसे उतारना सम्भव नहीं था। दुर्गादास के शब्दों में—"कांग्रेस के नेता और उनका समूचा दल ही संघर्ष को और आगे बढ़ाने के लिए अब बुरी तरह थक गए थे और मन ही मन, बिना विलम्ब किए सत्ता हथियाने और उसके फल भोगने की फिराक में थे।"[1] बादशाह खान ने भी कहा था—"कांग्रेस हायकमांड में मेरे कुछ साथी संघर्ष करने के पक्ष में थे। परन्तु बहुमत की यह राय थी कि इससे बस छूट जाएगी।"

और कांग्रेस ने माउंट बैटन योजना पर स्वीकृति दे दी। इन आशाओं के साथ कि एक दिन ऐसा जरूर आएगा, जब विभाजन का अन्त हो जाएगा और भारत फिर से एक हो जाएगा।

ऐसे समय गांधीजी को सुभाषचन्द्र बोस की याद आ गई। उन्होंने कहा वह सच्चा देशभक्त था, और उसने आजाद हिन्द फौज के माध्यम से यह सिद्ध कर दिया था कि हिन्दू और मुसलमान साथ साथ रह सकते हैं।

माउंट बैटन योजना स्वीकार करने के बाद एक काली और दुखद रात आयी—भारत के विभाजन की! और फिर उसके बाद एक सुखद और नया सवेरा आया—भारत की स्वतन्त्रता का।

---

1. DURGADAS—"The Congress leaders and the party as a whole were too weary to carry on the struggle any further and were, in their heart of hearts, anxious to grasp power and enjoy its fruits without further delay."

अभ्यास के प्रश्न

१. माउण्ट बैटन योजना क्या थी? उसे कांग्रेस ने क्यों स्वीकार किया?
(What was Mount Batten Plan? Why did Congress accept it?)

२. माउंट बैटन योजना पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।
(Write a short essay on Mount Batten Plan.)

Scanned with CamScanner